DR. EKLABYA SHARMA

Dr. Eklabya Sharma is an ecologist with over 40 years of proficiency in sustainable development of the Himalayan region. He is globally known for his pioneering research in the Himalaya, science diplomacy for regional cooperation and advocacy for the mountain agenda.

2. Born on 11th May, 1958, Dr. Sharma received Bachelor of Science in 1977, Masters of Botany in 1979 and Ph.D in Ecology in 1985 from the Banaras Hindu University. He is the Chairperson of Scientific Advisory Committee of the G. B. Pant National Institute of Himalayan Environment, Government of India, and Strategic Advisor of Ashoka Trust for Research in Ecology and the Environment, Bangalore.

3. Dr. Sharma made an ingenious contribution to the global knowledge by publishing nitrogen fixing role of non-leguminous Himalayan Alder from Darjeeling hills of the Eastern Himalaya. Under his leadership, Hindu Kush Himalaya Assessment was used for evidenced based policy by engaging 300+ leading researchers, practitioners, experts and policymakers, and drew global attention. This work has influence on 240 million people living in the mountains of eight countries including 86 million people of the Indian Himalayan Region and 1.9 billion people living in the basins of the rivers originating from the Himalaya.

4. Dr. Sharma taking the example of the Himalaya, successfully advocated mountain agenda in global initiatives such as Sustainable Development Goals (SDGs), Climate Assessments and Summits (UNFCCC and IPCC), and Biodiversity Assessments and Conventions (CBD and IPBES). Dr. Sharma contributed to many national and international initiatives of which to mention some are: Director of International Mountain Society, Switzerland; Trustee of The Mountain Institute, USA; Steering Committee of the UNEP's "Global Mountain Waste Management Outlook"; Steering Committee of the Nutrition in Mountain Agriculture Programme of Switzerland in three Continents namely Asia, Africa and South America; Adhoc Expert Committee on Mountain Biodiversity of the Convention on Biological Diversity, Canada; Expert Panel on 'Research for Development' call of the Swiss National Science Foundation and Swiss Agency for Development and Cooperation, Switzerland; Steering Committee of IUCN's 'The Asia Protected Areas Partnership'; Advisor, Himalaya Unnati Mission, Art of Living; Governing Council of Sikkim Manipal University; and Advisor, Chief Minister's Office, Government of Sikkim.

5. Dr. Sharma is the Fellow of the Indian National Science Academy (INSA) and Fellow of the National Academy of Sciences, India (NASI). He received many awards such as Young Scientist Medal of the Indian National Science Academy; Vishisht Vaigyanik Puraskar from the Ministry of Environment, Forests and Climate Change, Government of India; Honorable Mention Paper Award from the Soil and Water Conservation Society, USA. He received the "Excellence Award" for contributions in Science and Environment towards development of Modern India from the Sikkim University and Government of Sikkim, and the Government of Sikkim also conferred on him its 'Social Status Award' for contribution on the environment.

डॉ. एकलब्य शर्मा

डॉ. एकलब्य शर्मा एक पारिस्थितिकीविद हैं, जिनका हिमालय क्षेत्र के सतत विकास में 40 वर्ष से अधिक का अनुभव है। वह विश्व में हिमालय पर अपने अग्रणी शोध, क्षेत्रीय सहयोग के लिए विज्ञान राजनय और पर्वतीय हित की पक्षधरता के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. 11 मई, 1958 को जन्मे, डॉ. शर्मा ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1977 में विज्ञान स्नातक, 1979 में वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर और 1985 में पारिस्थितिकी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। वह जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालय पर्यावरण संस्थान, भारत सरकार की वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति के अध्यक्ष तथा अशोक पारिस्थितिकी और पर्यावरण अनुसंधान ट्रस्ट, बैंगलोर के रणनीतिक सलाहकार हैं।

3. डॉ. शर्मा ने पूर्वी हिमालय की दार्जिलिंग की पहाड़ियों में मिलने वाले गैर–फलीदार हिमालयी भिदुर (एल्डर) की नाइट्रोजन फिक्सिंग क्षमता के बारे में लिखकर वैश्विक ज्ञान में एक उम्दा योगदान दिया। उनके नेतृत्व में, साक्ष्य आधारित नीति तैयार करने हेतु 300 से अधिक अग्रणी शोधकर्ताओं, पेशेवरों, विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं के सहयोग से हिंदू–कुश हिमालय मूल्यांकन किया गया, जिसने पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित किया। इस कार्य का प्रभाव आठ देशों के पहाड़ों में रहने वाले 24 करोड़ लोगों पर पड़ा है, जिनमें भारतीय हिमालय क्षेत्र के 8.6 करोड़ लोग और हिमालय से निकलने वाली नदियों के बेसिनों में रहने वाले 190 करोड़ लोग शामिल हैं।

4. डॉ. शर्मा ने हिमालय पर किए गए कार्य से प्रेरणा पाकर सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.), जलवायु आकलन और शिखर सम्मेलन (यू.एन.एफ.सी.सी.सी. और आई.पी.सी.सी.) तथा जैव विविधता आकलन और समझौता (सी.बी.डी. और आई.पी.बी.ई.एस.) जैसी वैश्विक पहलों में पर्वतीय हित की वकालत सफलतापूर्वक की। डॉ. शर्मा ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में योगदान दिया, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय योगदान इस प्रकार हैं: इंटरनेशनल माउंटेन सोसाइटी, स्विट्जरलैंड के निदेशक; द माउंटेन इंस्टीट्यूट, यूएसए के ट्रस्टी; यूएनईपी की "ग्लोबल माउंटेन वेस्ट मैनेजमेंट आउटलुक" की संचालन समिति के सदस्य; तीन महाद्वीपों अर्थात् एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में स्विट्जरलैंड के पर्वतीय कृषि में पोषण कार्यक्रम की संचालन समिति सदस्य; जैव विविधता समझौता, कनाडा की पर्वतीय जैव विविधता पर तदर्थ विशेषज्ञ समिति के सदस्य; स्विस नेशनल साइंस फाउंडेशन और स्विस एजेंसी फॉर डेवलपमेंट एंड कोऑपरेशन, स्विट्जरलैंड के 'रीसर्च फॉर डेवलपमेंट' कॉल संबंधी विशेषज्ञ पैनल के सदस्य; आई.यू.सी.एन. की 'द एशिया प्रोटेक्टेड एरियाज पार्टनरशिप' की संचालन समिति के सदस्य; हिमालय उन्नति मिशन के आर्ट ऑफ लिविंग के सलाहकार; सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय की शासी परिषद के सदस्य; और सलाहकार, मुख्यमंत्री कार्यालय, सिक्किम सरकार ।

5. डॉ. शर्मा भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आई.एन.एस.ए.) के फेलो और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एन.ए.एस.आई.) के फेलो हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित गया है, यथा भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी का युवा वैज्ञानिक पदक; पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार से विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार; सॉइल एंड वॉटर कंजर्वेशन सोसायटी, यूएसए की ओर से ऑनरेबल मेंशन पेपर अवार्ड। सिक्किम विश्वविद्यालय और सिक्किम सरकार ने उन्हें आधुनिक भारत के विकास के लिए विज्ञान और पर्यावरण में योगदान हेतु "उत्कृष्टता पुरस्कार" प्रदान किया, और सिक्किम सरकार ने पर्यावरण पर योगदान के लिए उन्हें अपना 'सामाजिक स्थिति पुरस्कार' भी प्रदान किया।